बिहार का प्राकृतिक प्रदेश

- आयताकार, गंगा नदी दोनों भागों में विभाजित
- कुल क्षेत्रफल 94163 वर्ग किमी
  - हिमालय का अंश
  - मैदानी भाग मिट्टी
  - प्रायद्वीपीय पठार विस्तृत
  - छोटानागपुर पठार का उप अंश

→ तीन प्रदेश ← आधार: मिट्टी की प्रकृति, वनस्पति, ऊँचाई

- उत्तर का शिवालिक श्रेणी एवं तराई प्रदेश
- गंगा का विशाल मैदान
- दक्षिण का सीमांत पठारी प्रदेश

उत्तर का शिवालिक श्रेणी एवं तराई प्रदेश

- पश्चिमी चम्पारण (74 km)
  - सोमेश्वर श्रेणी
  - मिखना ठोरी
  - मरवा श्रेणी
- एक ~~संकीर्ण~~ अनुदैर्ध्य घाटी
  - सोमेश्वर
  - हरहा घाटी
  - रामनगर दून
- मुलायम बलुआ पत्थर चट्टानों की बहुलता
- यह प्रदेश उबड़-खाबड़ है

गंगा का मैदान

उत्तरी, दक्षिणी → गंगा का मैदान

- यह 90650 वर्ग किमी
- कुल क्षेत्रफल का 95%
- यह एक समतल है
- उर्वरता सर्वाधिक है

सारण, तिरहुत, दरभंगा, कोसी, पूर्णिया

उत्तरी गंगा का मैदान

- नदियों द्वारा परित्यक्त एवं विसर्पाकार गोखुर झील और ~~और~~ भी पाए जाते हैं
- औसत ऊँचाई 75 m से कम
  - उप तराई क्षेत्र
  - बांगर क्षेत्र खादर क्षेत्र
  - चौर एवं मन में विभाजित

उप तराई प्रदेश या भावर प्रदेश (बिहार के 7 जिलों में एक संकीर्ण पट्टी के रूप में पश्चिम पूर्व फैला हुआ है। यह एक सपाट आर्द्र क्षेत्र है जहाँ 10 किमी चौड़ा क्षेत्र में कंकड बालू का निक्षेप पाया जाता है।

बांगर क्षेत्र पुराना जलोढ़ का क्षेत्र है इसमें 6-8 M ऊँची टीले भी दिखाई देते हैं इसमें प्रतिवर्ष बाढ़ नहीं आती है। खादर भूमि नया जलोढ़ क्षेत्र है जो गंडक नदी और कोसी नदी के मध्य स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ के आने से मिट्टियाँ उपजाऊ हो गई है। परिणामतः जनसंख्या का बसाव भी अधिक हुआ है।

उत्तरी मैदान में जलमग्न निम्न भूमि भी पायी जाती है जिसे चौर या मन कहा जाता है। यह चौर प्राकृतिक अपवाहों के परिणामस्वरूप निर्मित निम्न भूमि है। यहाँ वर्षा जल जलजमाव जमा होता रहता है। इनमें पश्चिमी चंपारण का लखनी चौर, पूर्वी चंपारण का बहादुरपुर एवं कुंदरपुर चौर प्रमुख है। यहाँ मन या गोखुर झील है जो नदियों के मार्ग परिवर्तन से बने हैं। यह मीठे पानी के विशाल एवं गहरे स्रोत है। पूर्वी चंपारण का टेटरिया मन, माधोपुर मन एवं पश्चिमी चंपारण का सिमरा मन, सिमरी मन, बटैया मन प्रमुख है। यहाँ मत्स्य

पालन होता है।

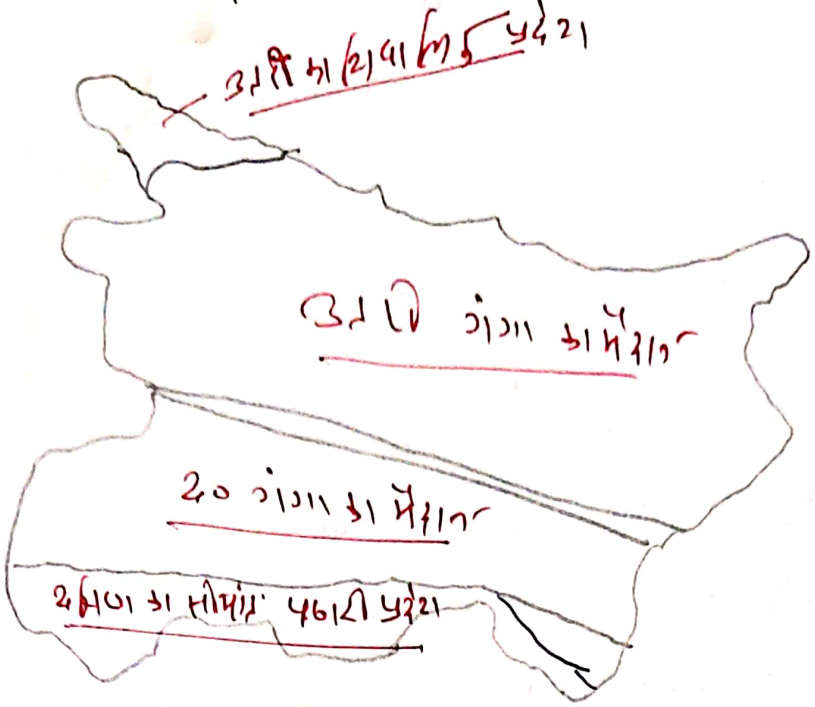

दक्षिण गंगा का मैदान — यह पठारी नदियों द्वारा वाहित जलोढ़ मिट्टियों के निक्षेपण से बना है। यह पश्चिम में अधिक चौड़ा और पूर्व में कम चौड़ा है। इस भाग में गंगा प्राकृतिक कगार का निर्माण करती है। इस कारण इस क्षेत्र में बहने वाली अधिकांश छोटी नदियाँ पुनपुन, फल्गु, किउल आदि समानांतर प्रवाहित होकर 'पीनेट प्रवाह प्रणाली' का निर्माण करती है। इस प्राकृतिक कगार के दक्षिण में कुछ जलमग्न निम्न भूमि है जिसे टाल क्षेत्र या जल्ला क्षेत्र कहा जाता है। पटना में इसे जल्ला तो लखीसराय एवं मोकामा में टाल, मोर टाल प्रमुख है। इस क्षेत्र में भूमि की ढाल उत्तर की ओर है। चूंकि यहाँ सदावाहिनी नदियाँ कम है इस कारण यहाँ मोटा बालू

की प्रधानता ~~है~~ पायी जाती है। धान, पुनपुन और फल्गु के बालू तो भवन निर्माण के लिए व्यापक उपयुक्त है।

द० का सीमांत पठारी प्रदेश

यह मोर हाल से मुंगेर तक क्वार्टजाइट चट्टानों एकल पीठ के रूप मे विस्तारित है। यह भाग तीव्र वाहित सरिताओं, समतल ~~पायी जाती~~ सक्रिय घाटियाँ एवं एक विराम ढलान से युक्त पठारी प्रदेश ~~है~~ जिसमें नीस, शिस्ट एवं ग्रेनाइट चट्टानों की बहुलता है। यहाँ 150-200 m ऊँचे उबड़-खाबड़ ढलान पायी जाती है। भौगोलिक से भी यहाँ की शृंखलाबद्ध पहाड़ियाँ यथा शेखपुरा, राजगीर और गिद्धौर की पहाड़ियाँ भी पायी जाती है। यह प्रदेश छोटानागपुर पठार का ही भाग है। जो खनिजों से युक्त भाग माना जाता है।